आचार्य प्रशांत: एक समकालीन दार्शनिक उपस्थिति

Digital Desk 01 18 Apr 2026 3:59 PM

अजीत सिंह

भारत के सार्वजनिक जीवन में आचार्य प्रशांत का नाम पिछले वर्षों में केवल आध्यात्मिक विमर्श तक सीमित नहीं रहा है। उनके वक्तव्य, पुस्तकें, विश्वविद्यालयों में आयोजित संवाद, और डिजिटल माध्यमों पर उनकी व्यापक उपस्थिति ने उन्हें एक ऐसे सार्वजनिक दार्शनिक के रूप में स्थापित किया है, जिनकी चर्चा केवल धार्मिक श्रोताओं के बीच नहीं, बल्कि छात्रों, पेशेवरों और समसामयिक प्रश्नों में रुचि रखने वाले पाठकों के बीच भी होती है।

वे सामान्य अर्थों में न तो पारंपरिक गुरु की छवि में ढलते हैं, न ही मोटिवेशनल स्पीकर, सामाजिक कार्यकर्ता या अकादमिक विद्वान की किसी एक श्रेणी में पूरी तरह समाते हैं। उनके काम का केंद्र मानव-दुख, अहंकार, स्वतंत्रता, आत्मचिंतन और वेदांत के प्रश्न हैं, लेकिन उनकी भाषा और प्रस्तुति इन्हें केवल शास्त्रीय विमर्श का विषय बनाकर नहीं छोड़ती। इसी कारण उनकी उपस्थिति को समझने के लिए प्रचलित लेबल अक्सर पर्याप्त नहीं पड़ते।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

आचार्य प्रशांत का जन्म 7 मार्च 1978 को उत्तर प्रदेश के आगरा में हुआ। उनका जन्म नाम प्रशांत त्रिपाठी है। वे एक मध्यमवर्गीय परिवार में पले-बढ़े। उनके पिता अवधेश नारायण त्रिपाठी प्रशासकीय सेवा से जुड़े थे और घर में अध्ययन का वातावरण था। उपलब्ध जीवनी-सामग्री के अनुसार, बचपन से ही वे गंभीर स्वभाव, जिज्ञासा और जीवन-संबंधी प्रश्नों में रुचि रखने वाले छात्र थे।

उनका शैक्षणिक रिकॉर्ड उल्लेखनीय रहा। उन्होंने आईसीएसई बोर्ड परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया, एनटीएसई छात्रवृत्ति हासिल की, और शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए सम्मानित भी हुए। 1999 में उन्होंने आईआईटी दिल्ली से बी.टेक किया। बाद में उन्होंने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण की और भारतीय रेलवे कार्मिक सेवा के लिए चयनित हुए, लेकिन प्रशिक्षण काल में ही उससे अलग हो गए। 2003 में उन्होंने आईआईएम अहमदाबाद से एमबीए किया।

कॉर्पोरेट दुनिया से बाहर आने का निर्णय

उच्च शिक्षा के बाद उन्होंने कुछ समय कॉर्पोरेट क्षेत्र में काम किया। वे जीई कैपिटल और बाद में एक निजी कंसल्टेंसी संस्था से जुड़े रहे। पर यह चरण लंबा नहीं चला। उपलब्ध विवरणों के अनुसार, कॉर्पोरेट जीवन उन्हें लंबे समय तक अपने लिए उपयुक्त नहीं लगा। कुछ ही वर्षों में उन्होंने उस रास्ते से हटने का निर्णय लिया। यह मोड़ उनके जीवन में केवल पेशेगत परिवर्तन नहीं था। इसके बाद उनका काम शिक्षा, संवाद और आत्मविकास के क्षेत्र में व्यवस्थित रूप से आकार लेने लगा।

संवाद, शिक्षण और संस्थागत आरंभ

2006 में उन्होंने अद्वैत लाइफ-एजुकेशन की स्थापना की। इसी मंच के माध्यम से उन्होंने कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में सेल्फ-डेवलपमेंट और प्रबंधन-विकास से जुड़े कार्यक्रम चलाने शुरू किए। शुरुआती दौर सरल नहीं था। उनकी वेबसाइट में उपलब्ध जीवनी के अनुसार उनके कार्यक्रमों को लेकर संस्थानों, अभिभावकों और यहाँ तक कि सहयोगियों के बीच भी संदेह था कि इस प्रकार के संवादों का व्यावहारिक महत्व क्या होगा। इसके बावजूद उन्होंने प्रश्नोत्तर-आधारित संवादों, विषयगत सत्रों और अध्ययन-श्रृंखलाओं के माध्यम से अपना कार्य जारी रखा।

इसी समय उन्होंने हिमालय में शिविरों की शुरुआत भी की, जिनमें सीमित संख्या में प्रतिभागियों के साथ कई दिनों तक गहन चर्चा और मनन का वातावरण बनाया जाता था। उपलब्ध लेखक-परिचयों में ऐसे अनेक शिविरों का उल्लेख मिलता है। इन प्रारंभिक पहलों ने आगे चलकर उनके श्रोताओं और विद्यार्थियों के उस समुदाय की नींव रखी, जो बाद के वर्षों में अधिक व्यापक हुआ।

2008 में उन्होंने अपना पहला सार्वजनिक संवाद सत्र लिया। इसके बाद उनके सत्र रिकॉर्ड होकर इंटरनेट पर आने लगे। शुरू में यह पहुँच मुख्यतः उन्हीं संस्थानों तक सीमित थी जहाँ वे जाते थे, लेकिन डिजिटल मंचों के विस्तार के साथ यह दायरा बहुत तेजी से बढ़ा।

दिसंबर 2015 में उन्होंने प्रशांतअद्वैत फाउंडेशन की स्थापना की, जो उनके शिक्षण, प्रकाशन और डिजिटल कार्य का औपचारिक संस्थागत आधार बना। इसका मुख्यालय दिल्ली-एनसीआर स्थित बोधस्थल है।

उनके शिक्षण का दार्शनिक आधार

आचार्य प्रशांत के दर्शन का ढाँचा अद्वैत वेदांत, बौद्ध माध्यमिक दर्शन, ताओवादी चिंतन और पश्चिमी अस्तित्ववाद, इन सभी परंपराओं के साथ संवाद करता है। साथ ही, उनके संदर्भ-क्षेत्र में ज़ेन, सूफी परंपरा, और संत कबीर, मीराबाई, रूमी तथा बाबा बुल्ले शाह जैसे कवि-संत भी शामिल हैं। वे इन परंपराओं को केवल ऐतिहासिक या शास्त्रीय विषयों की तरह नहीं, बल्कि समकालीन जीवन, मनोविज्ञान और व्यक्ति की आंतरिक उलझनों से जोड़कर देखते हैं।

हालांकि उनका दर्शन इन परंपराओं से केवल ग्रहण ही नहीं करता, बल्कि कई महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर उनसे अलग भी खड़ा होता है। उपलब्ध सामग्री के अनुसार, वे नव-अद्वैत की उस धारा को अस्वीकार करते हैं जो यह मानती है कि मुक्ति पहले से उपलब्ध है और उसके लिए केवल एक दार्शनिक स्वीकृति पर्याप्त है। उनके अनुसार अहंकार की वास्तविक कार्यप्रणाली को स्पष्ट रूप से देखे बिना ऐसी कोई भी घोषणा अर्थहीन रहती है। इसी प्रकार, वे बौद्ध-प्रेरित ध्यान-तकनीकों को आत्म-जिज्ञासा का विकल्प नहीं मानते। पश्चिमी अस्तित्ववाद के संदर्भ में भी उनकी स्थिति भिन्न है: वे इस आग्रह को अस्वीकार करते हैं कि व्यक्ति स्वयं अपने लिए अर्थ निर्मित कर सकता है, क्योंकि उनके अनुसार अर्थ-निर्माण का यह प्रयास भी अहंकार की एक और क्रिया मात्र है।

उनके शिक्षण का केंद्रीय आग्रह यह है कि मनुष्य की मूल समस्या बाहरी उपलब्धियों की कमी नहीं, बल्कि भीतरी अस्थिरता, संस्कारगत अहंकार और आत्म-अज्ञान है। इसी कारण उनकी शिक्षाओं में आत्म-निरीक्षण, स्वतंत्रता, संबंध, भय, कामना, सफलता, उपभोग, पर्यावरण और सामाजिक संरचनाओं जैसे विषय बार-बार लौटते हैं।

उनकी शैली का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि वे आध्यात्मिकता को सांत्वना या कर्मकांड के स्तर पर नहीं रखते। उपलब्ध सामग्री से यह स्पष्ट है कि उनका ज़ोर आत्मपरीक्षण, बौद्धिक ईमानदारी और असुविधाजनक प्रश्नों से बचने के बजाय उन प्रश्नों को सीधा और पूर्वाग्रह रहित देखने पर रहता है। यही कारण है कि उनके श्रोता-वर्ग में ऐसे लोग भी शामिल हैं जो पारंपरिक धार्मिक शिक्षण से अलग किसी अधिक विश्लेषणात्मक या प्रश्नप्रधान शैली की तलाश में रहते हैं।

पूर्ववर्तियों से तुलना का प्रश्न

आचार्य प्रशांत की तुलना अक्सर आधुनिक भारत के कुछ प्रमुख आध्यात्मिक या दार्शनिक शिक्षकों से की जाती है, विशेष रूप से जे. कृष्णमूर्ति और ओशो से। हालांकि ऐसी तुलनाएँ अधिकतर शैली, सार्वजनिक उपस्थिति और दार्शनिक आग्रह के स्तर पर की जाती हैं, न कि किसी सीधी समानता के रूप में।

उनके संदर्भ में जो बात विशेष रूप से सामने आती है, वह है रहस्यवादी दावों से दूरी और सार्वजनिक तर्कशीलता पर जोर। उनकी रिकॉर्डेड सामग्री में वे अंधविश्वास, कर्मकांड और बिना जाँचे-परखे मान लेने के विरुद्ध लगातार बोलते दिखाई देते हैं। दूसरी ओर, वे अपनी भाषा और संदर्भों में भारतीय दार्शनिक परंपरा से जुड़े रहते हैं। यही संयोजन उन्हें कई बार अलग तरह की स्वीकृति और विरोध, दोनों दिलाता है।

भाषा का चुनाव और उसका अर्थ

आचार्य प्रशांत के सार्वजनिक कार्य का एक उल्लेखनीय पक्ष उनकी भाषा है। आईआईटी और आईआईएम पृष्ठभूमि तथा अंग्रेज़ी पर उनकी पकड़ के बावजूद उन्होंने मुख्यतः हिंदी को अपनी प्राथमिक अभिव्यक्ति बनाया। यह हिंदी अकादमिक या अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ नहीं, बल्कि अपेक्षाकृत सीधी, बोलचाल के करीब और उत्तर भारतीय जन-संवाद से जुड़ी हुई है।

इस चुनाव का असर उनकी पहुँच पर भी पड़ा। इससे वे उन श्रोताओं तक पहुँचे जिनके लिए वेदांत, गीता या आत्मचिंतन जैसे विषय सामान्यतः या तो अत्यधिक धार्मिक भाषा में उपलब्ध होते हैं या फिर अंग्रेज़ी-केंद्रित बौद्धिक भाषा में। उनकी शैली ने इन दोनों के बीच एक तीसरी जगह बनाई। इसके बावजूद अंग्रेज़ी में उन्हें सुनने वालों की संख्या भी कई करोड़ों में है।

विश्वविद्यालयों और युवाओं के बीच उपस्थिति

प्रकाशित स्रोतों और फाउंडेशन-संबंधी उपलब्ध सामग्री के अनुसार, आचार्य प्रशांत ने 200 से अधिक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में संवाद किए हैं। वनइंडिया की एक रिपोर्ट में उल्लेख है कि इनमें आईआईटी, आईआईएम, एम्स, बिट्स और आईआईएससी जैसे संस्थान भी शामिल हैं। आईआईटी दिल्ली, जो उनका अल्मा मेटर है, ने उन्हें अनेक बार आमंत्रित किया है। बिट्स पिलानी और विभिन्न एनआईटी तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेजों में भी उनके कार्यक्रम हुए हैं।

उन्हें भारत के बाहर भी संस्थानों में आमंत्रित किए जाने का उल्लेख मिलता है, जिनमें यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले; न्यूयॉर्क का बार्ड कॉलेज; और बिट्स पिलानी का दुबई परिसर शामिल हैं।

इन सत्रों की प्रकृति का उल्लेख करना आवश्यक है। उपलब्ध विवरणों से पता चलता है कि ये सामान्य धार्मिक प्रवचन के बजाय संवादात्मक, प्रश्नोत्तर-आधारित और कई बार लंबे समय तक चलने वाले कार्यक्रम होते हैं। छात्रों

के प्रश्नों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, करियर, अर्थ, विज्ञान, मिथक, इतिहास, संबंध और मानसिक दबाव जैसे विषय शामिल रहे हैं।

सामाजिक और समसामयिक मुद्दों पर वक्तव्य

आचार्य प्रशांत का काम केवल आंतरिक या दार्शनिक प्रश्नों तक सीमित नहीं है। उपलब्ध सामग्री के अनुसार उन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता, खान-पान, पशु-अधिकार, पर्यावरण, उपभोग, शिक्षा और सामाजिक संरचनाओं जैसे विषयों पर भी लगातार वक्तव्य दिए हैं।

उनकी पर्यावरण संबंधी दृष्टि का एक विशिष्ट पक्ष यह है कि वे जलवायु-संकट को केवल नीतिगत या तकनीकी प्रश्न की तरह नहीं देखते, बल्कि उसे मनुष्य की उपभोग-केंद्रित मानसिकता से जोड़ते हैं। इसी तरह महिलाओं पर उनके वक्तव्यों में भी अधिकारों की चर्चा के साथ-साथ पहचान, भूमिका और स्वतंत्रता के गहरे प्रश्न शामिल रहते हैं। इन कारणों से भी उन्हें विभिन्न पक्षों से समर्थन और आलोचना, दोनों मिले हैं।

आलोचना, विवाद और सार्वजनिक प्रतिक्रिया

आचार्य प्रशांत की सार्वजनिक उपस्थिति के साथ विवाद और आलोचना भी जुड़े रहे हैं। आलोचनाएँ कई स्तरों पर आती रही हैं। कुछ परंपरावादी हलकों ने उनकी अद्वैत-व्याख्याओं पर आपत्ति की है। कुछ सांस्कृतिक रूढ़िवादी उनके खान-पान, जाति और लैंगिकता संबंधी विचारों का विरोध करते रहे हैं। सोशल मीडिया पर उनके संगठनात्मक ढाँचे, पाठ्यक्रमों और आर्थिक मॉडल को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि उनके बारे में प्रतिक्रियाएँ एकरेखीय नहीं हैं। जो तत्व एक वर्ग को आकर्षित करते हैं, वही दूसरे वर्ग को असहज करते हैं। उनकी शैली में स्पष्टवादिता, शास्त्रीय संदर्भ, तर्कशीलता और समसामयिक विषयों का मेल है; यही कारण है कि उनके काम को लेकर चर्चा अक्सर समर्थन और असहमति दोनों के साथ चलती है।

पुस्तकें और प्रकाशन

फाउंडेशन की उपलब्ध जानकारी के अनुसार, आचार्य प्रशांत के 160 से अधिक पुस्तक-शीर्षक उपलब्ध हैं, जिनमें वेदांत, भगवद्गीता, उपनिषद, संबंध, मनोविज्ञान, समाज और समकालीन जीवन से जुड़े विषय शामिल हैं। इनमें से अनेक पुस्तकें उनके प्रवचनों और संवादों पर आधारित हैं।

उनकी प्रमुख अंग्रेज़ी पुस्तकों में Karma: Why Everything You Know About It Is Wrong, Ananda: Happiness Without Reason, Maya: I Bow to Thee, You Cannot Be Overcome, और Truth Without Apology शामिल हैं। प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार, इनमें से कुछ

पुस्तकों ने राष्ट्रीय बेस्टसेलर सूचियों में स्थान बनाया। विशेष रूप से Karma और Truth Without Apology के बारे में कई मीडिया रिपोर्टों में उनके व्यावसायिक प्रदर्शन और पाठकीय प्रतिक्रिया का उल्लेख मिलता है।

डिजिटल उपस्थिति और संस्थागत विस्तार

आचार्य प्रशांत की पहचान के निर्माण में डिजिटल माध्यमों की बड़ी भूमिका रही है। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, उनका मुख्य हिंदी यूट्यूब चैनल 2026 की शुरुआत तक 6 करोड़ सब्सक्राइबर्स पार कर चुका था। उनका एक अंग्रेज़ी चैनल भी है। विभिन्न स्रोतों में उनकी कुल डिजिटल पहुँच 10 करोड़ से अधिक बताई गई है। हिंदी चैनल पर हजारों वीडियो उपलब्ध हैं, और उनका सामग्री-संग्रह केवल क्लिप्स या छोटे संदेशों तक सीमित नहीं, बल्कि लंबे सत्रों, प्रश्नोत्तर, पाठ्यक्रम और व्याख्यानों तक फैला है।

Acharya Prashant App भी इस विस्तार का एक प्रमुख माध्यम है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें लाइव सत्र, रिकॉर्डेड सामग्री, पुस्तकें और अन्य अध्ययन-संसाधन उपलब्ध हैं।

प्रशांतअद्वैत फाउंडेशन का गीता मिशन भी इसी व्यापक काम का एक केंद्रीय हिस्सा है। रिपोर्टों और संस्थागत दावों के अनुसार, इससे दो लाख से अधिक प्रतिभागी जुड़े हैं। जून 2024 में India Book of Records ने फाउंडेशन को एक बड़े ऑनलाइन भगवद्गीता परीक्षा आयोजन के लिए मान्यता दी थी। बाद के समय में भी विभिन्न रिकॉर्ड और सहभागिता-संबंधी दावे सामने आए।

2025 में PVR INOX के साथ साझेदारी और दूरदर्शन पर शुरू हुई 'स्वधर्म' शृंखला ने उनकी पहुँच को डिजिटल और भौतिक, दोनों मंचों पर विस्तृत किया।

सम्मान और सार्वजनिक मान्यता

हाल के वर्षों में आचार्य प्रशांत और प्रशांतअद्वैत फाउंडेशन को कई संस्थागत सम्मानों का उल्लेख मिलता है। अप्रैल 2025 में IIT Delhi Alumni Association द्वारा उन्हें Outstanding Contribution to National Development Award दिए जाने की सूचना प्रकाशित हुई। पर्यावरण और पशु-कल्याण से जुड़े कुछ अन्य पुरस्कारों का भी विभिन्न स्रोतों में उल्लेख है। इन सम्मानों ने उनके सार्वजनिक काम को केवल आध्यात्मिक दायरे में नहीं, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय संदर्भों में भी देखने की एक पृष्ठभूमि प्रदान की है।

समकालीन परिदृश्य में स्थान

समकालीन भारत में आचार्य प्रशांत की उपस्थिति को केवल एक आध्यात्मिक शिक्षक की उपस्थिति कहना शायद पर्याप्त नहीं होगा। उनका काम दार्शनिक शिक्षण, सार्वजनिक वक्तव्य, पुस्तक-लेखन, डिजिटल प्रसार, युवा संवाद

और समसामयिक प्रश्नों पर हस्तक्षेप, इन सभी के संगम पर खड़ा दिखाई देता है। यही कारण है कि उनके बारे में बनी राय भी एकरूप नहीं है।

एक ओर वे उन लोगों को आकर्षित करते हैं जो धर्म, वेदांत और आत्मचिंतन को प्रश्नशील और विश्लेषणात्मक ढंग से सुनना चाहते हैं; दूसरी ओर उनके वक्तव्य कई स्थापित सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक धारणाओं को चुनौती देते हैं। इसी द्वंद्व में उनकी सार्वजनिक छवि निर्मित होती है।

भारतीय दार्शनिक या आध्यात्मिक परंपरा के औपचारिक इतिहास में उनकी जगह क्या होगी, यह प्रश्न भविष्य के लिए खुला है। लेकिन यह स्पष्ट है कि पिछले कुछ वर्षों में वे भारत के सार्वजनिक और डिजिटल जीवन में ऐसी उपस्थिति बनाकर उभरे हैं, जिसे समर्थक और आलोचक, दोनों आसानी से नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते।

मंथन

खबरें और भी हैं...

IMF ने बढ़ाई पाकिस्तान मुश्किलें, इस शर्त को पूरा करो तभी मिलेगा कर्ज !

देश, दुनिया, बड़ी खबर, भास्कर +, मंथन

Jadugora: झारखण्ड के इस गांव को लगा यूरेनियम का श्राप, बच्चे विकलांग और बूढ़ों को हो रहा कैंसर

Uncategorized, बड़ी खबर, भास्कर +, मंथन

Lalu Yadav की बढ़ी मुश्किलें: 13 साल पुराने केस में कुर्की का आदेश दिया

बिहार, देश, बड़ी खबर, मंथन